ASTRO ARPITA NATH

सकारात्मक - केंद्र, त्रिकोण और उपचय भाव

Arpita Nath द्वारा · प्रारंभिक ज्योतिष नोट्स · 2026-07-28

वैदिक ज्योतिष में, जन्म कुंडली के 12 भावों को विशिष्ट कार्यात्मक श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है। जहां कुछ भाव कार्मिक परीक्षाओं को दर्शाते हैं, वहीं सकारात्मक भाव वर्गीकरण - विशेष रूप से केंद्र, त्रिकोण और उपचय; जीवन में शक्ति, भाग्य, सफलता और निरंतर विकास की रीढ़ बनते हैं।

इन भाव समूहों को समझने से कुंडली की क्षमता और ग्रहों की शक्ति का आकलन करना बेहद सरल हो जाता है।

1. केंद्र भाव (शक्ति और कर्म के स्तंभ)

केंद्र भाव जन्म कुंडली के आधारशिला भाव हैं: पहला, चौथा, सातवां और दसवां भाव।

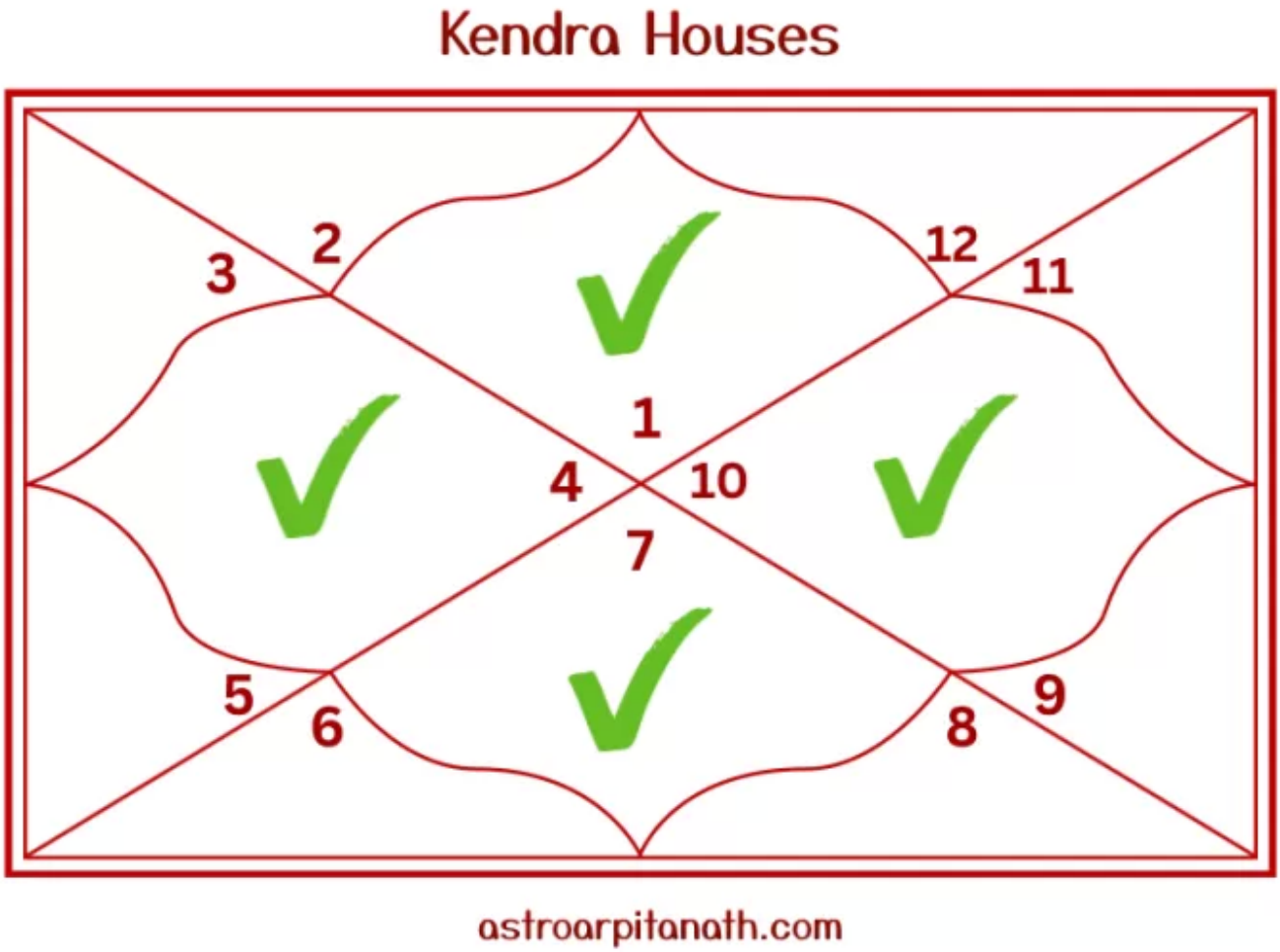

• **महत्व**: विष्णु स्थान (पालनकर्ता भाव) के रूप में जाने जाने वाले ये भाव जीवन के ठोस, संरचनात्मक स्तंभों को नियंत्रित करते हैं - स्वयं/स्वास्थ्य (पहला), घर/मानसिक शांति (चौथा), साझेदारी/विवाह (सातवां) और करियर/प्रतिष्ठा (दसवां)।

• **नियंत्रण**: भौतिक शरीर, घरेलू शांति, जीवनसाथी/व्यावसायिक साझेदार और करियर।

• **प्रमुख विशेषता**: केंद्र भाव में स्थित कोई भी ग्रह अत्यधिक सक्रिय हो जाता है और ठोस परिणाम देने में सक्षम होता है।

2. त्रिकोण भाव (भाग्य और कृपा के भाव)

त्रिकोण भाव ज्योतिष में सबसे शुभ भाव माने जाते हैं: पहला, पांचवां और नौवां भाव।

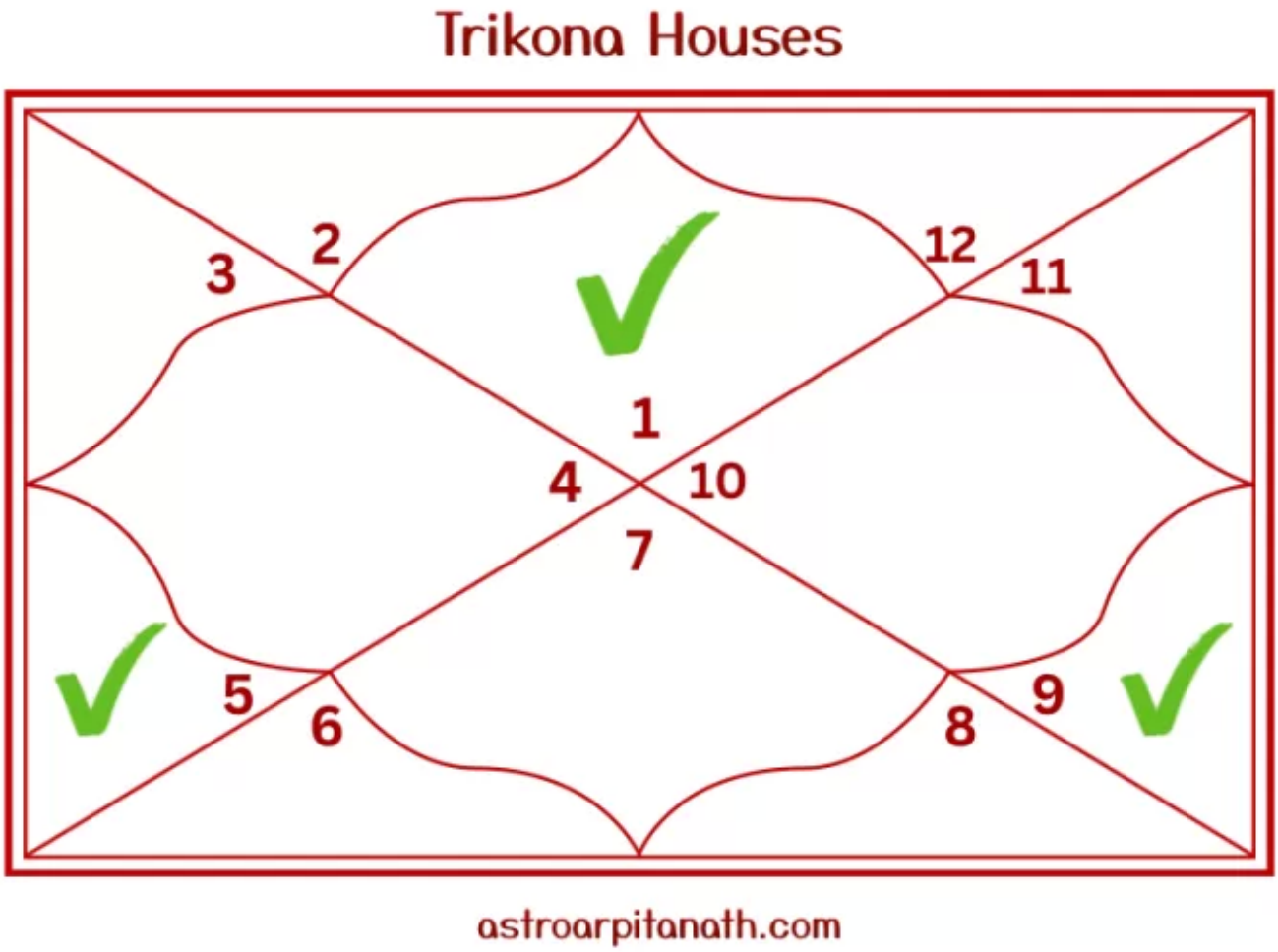

• **महत्व**: लक्ष्मी स्थान (समृद्धि और कृपा के भाव) के रूप में जाने जाने वाले ये भाव पूर्व जन्म के अच्छे कर्मों (पूर्व पुण्य), ईश्वरीय कृपा, बुद्धि, नैतिकता और समग्र भाग्य का प्रतिनिधित्व करते हैं।

• **नियंत्रण**: स्वयं/पहचान (पहला), बुद्धि/संतान/अनुमान (पांचवां), उच्च ज्ञान/धर्म/भाग्य (नौवां)।

• **प्रमुख विशेषता**: पहला भाव अद्वितीय है क्योंकि यह केंद्र और त्रिकोण दोनों है, जो लग्न को पूरी कुंडली का सबसे महत्वपूर्ण केंद्र बिंदु बनाता है!

3. उपचय भाव (वृद्धि और सुधार के भाव)

उपचय भाव निरंतर प्रगति और विकास के भाव हैं: तीसरा, छठा, दसवां और ग्यारहवां भाव।

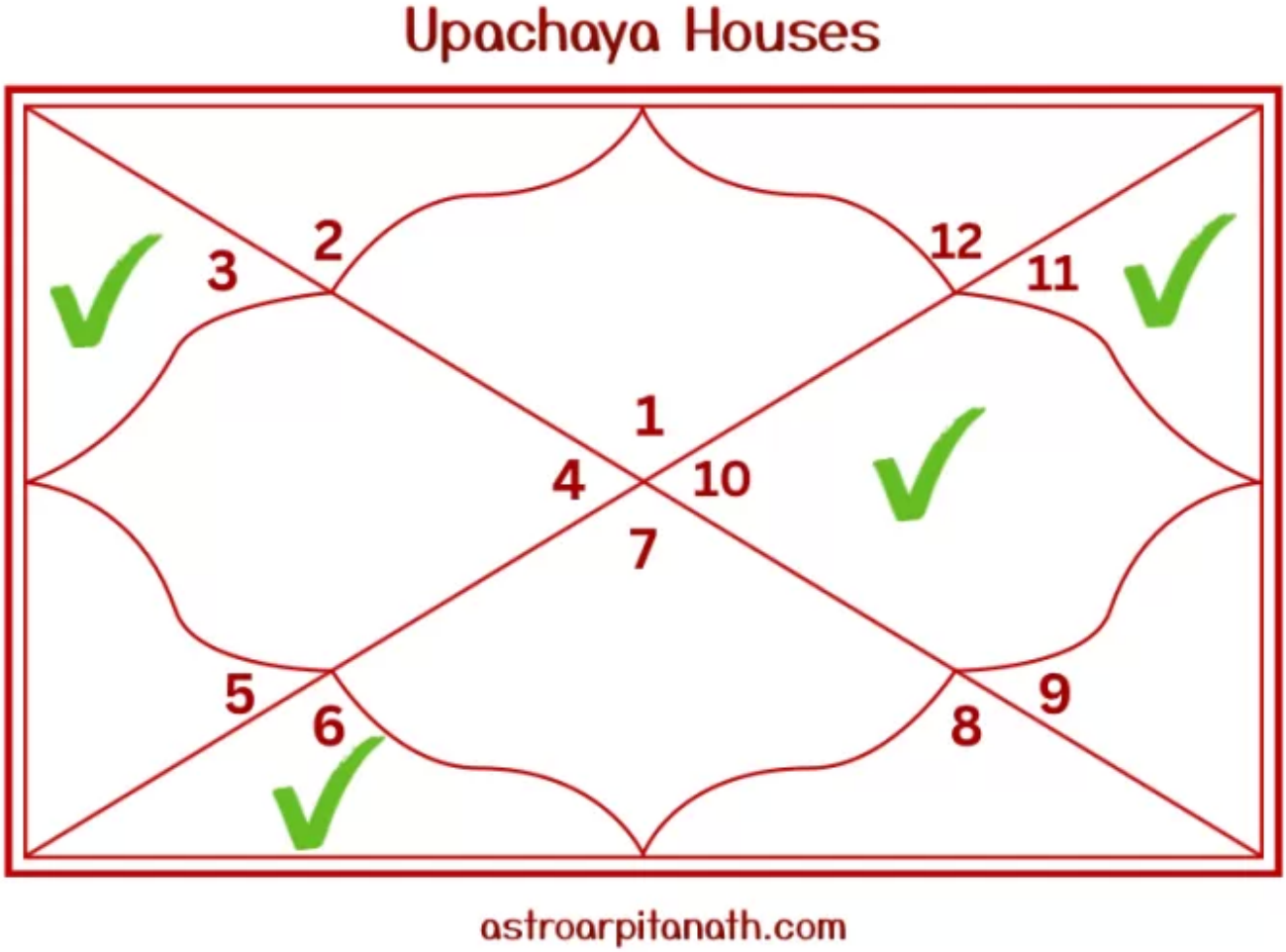

• **महत्व**: 'उपचय' शब्द का शाब्दिक अर्थ "सुधार" या "वृद्धि" है। इन भावों में व्यक्तिगत प्रयास, अनुशासन और समय की आवश्यकता होती है, लेकिन ये उम्र बढ़ने के साथ-साथ निरंतर सुधार की गारंटी देते हैं।

• **नियंत्रण**: साहस/प्रयास (तीसरा), शत्रुओं/ऋणों/रोगों पर विजय (छठा), करियर/कर्म (दसवां), आय/इच्छाएं/नेटवर्क (ग्यारहवां)।

• **प्रमुख विशेषता**: पापी या क्रूर ग्रह (जैसे शनि, मंगल, राहु और सूर्य) उपचय भावों में असाधारण रूप से अच्छा प्रदर्शन करते हैं क्योंकि उनकी आक्रामक ऊर्जा प्रतिस्पर्धा से लड़ने (छठा), साहसिक पहल करने (तीसरा), कड़ी मेहनत करने (दसवां) और धन संचय करने (ग्यारहवां) में लग जाती है।

सर्वश्रेष्ठ संयोजन: राज योग

वैदिक ज्योतिष में, जब किसी केंद्र भाव का स्वामी किसी त्रिकोण भाव के स्वामी के साथ युति करता है, दृष्टि संबंध बनाता है या राशि परिवर्तन करता है, तो यह धर्म-कर्माधिपति राज योग का निर्माण करता है - जो कुंडली में शक्ति, अधिकार, प्रसिद्धि और स्थायी सफलता के लिए सबसे श्रेष्ठ संयोजन है!

सारांश

• केंद्र भाव कार्य करने की नींव और शक्ति प्रदान करते हैं।

• त्रिकोण भाव आसानी से सफलता प्राप्त करने के लिए भाग्य और ईश्वरीय कृपा प्रदान करते हैं।

- उपचय भाव हर साल अधिक मजबूत बनने के लिए साहस और दृढ़ता प्रदान करते हैं।

---

https://astroarpitanath.com/hindi/positive-houses-in-kundli/

ज्योतिष केवल मार्गदर्शन के लिए प्रदान किया जाता है। जीवन के महत्वपूर्ण निर्णयों के लिए, कृपया किसी योग्य पेशेवर से परामर्श लें।